

जापान में सैन्यवाद का उदय

(RISE OF MILITARISM IN JAPAN)

जापान में सैन्यवाद की परम्परा बहुत पुरानी थी। जापान सातवीं शताब्दी तक कई छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था और इन सभी राज्यों पर जापान के सम्राट का नियंत्रण होता था। जापान में अधिकारियों और नागरिक सेवकों के रखरखाव के लिए उन्हें जागीर (Fief) देने की प्रथा प्रचलित थी। फलस्वरूप जापान में सामन्तवाद का उदय हुआ जिनका प्रमुख कार्य सैन्य सेवा था। 12वीं शताब्दी में योरीतोमा (Yoritomo) के शासनकाल के समय में शक्तिशाली सामन्तों का युग प्रारम्भ हुआ और इस समय तक शोगून का पद अत्यधिक महत्वपूर्ण बन गया था। शोगून का पद उसे प्रदान किया जाता था जो सामन्तों में सबसे शक्तिशाली होता था और जिसका सेना पर नियंत्रण होता था। जापान का सम्राट शोगून के जरिये ही शासन करता था। तबसे जापान की सरकार का स्वरूप सैन्यवादी बन गया था। धीरे-धीरे जापानी सरकार का स्वरूप और आदर्श मध्यकालीन यूरोप के सामन्तवाद की तरह बन गया। यह व्यवस्था बाकुफर (Bakufu) के नाम से जानी जाती थी और इसका मुख्य शासक शोगून होता था। जापान की सेना का कोड बुशिदो (Bushido) नाम से जाना जाता था।

राष्ट्रीय सेना का गठन (Organisation of National Army) - 19वीं शताब्दी के मध्य तक बाकुफर (सामन्तवादी) व्यवस्था जापान में प्रचलित रही लेकिन 1868 ई० में मेइजी पुनर्स्थापना के साथ ही यह प्रथा समाप्त हो गई और सम्राट ने सत्ता अपने हाथों में ले ली। शोगून व्यवस्था के अन्त के बाद एक नयी सेना का गठन हुआ। अब तक समुदाई सामन्त जापान की सेना में ही रखे जाते थे और विभिन्न सामन्ती सरदारों के अधीन अपनी सैनिक सेवा देते थे। सामान्य जनता को जापान की सेना में नहीं भर्ती किया जाता था लेकिन मेइजी शासक ने सामन्ती सेना की जगह राष्ट्रीय सेना का गठन किया। राष्ट्रीय सेना में जाति की जगह योग्यता को प्राथमिकता दी गई। अनिवार्य सैनिक सेवा योजना (Scheme of Compulsory Military Service) के लागू होने के साथ जापान के इतिहास में एक नये क्रान्तिकारी युग का प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार 19वीं शताब्दी के अन्त तक जापान के सेना में एक नयी प्रवृत्ति का समावेश हुआ। जापान अपनी जल सेना को भी इंग्लैंड की नौ सेना की तरह विकसित करने का इच्छुक था।

सैनिक संगठन पर सम्राट का प्रभुत्व (Supremacy of Emperor over Military Organisation) - 1889 ई० में जापान द्वारा एक अध्यादेश अपनी सेना की शक्ति में सुधार करने के लिए निर्गत किया गया जिसमें कुछ एवं नौ सेना मन्त्री को अधिकृत किया गया कि वह बिना प्रधान मन्त्री से सलाह किये किसी मुद्दे पर सम्राट से सीधे विवेचना करे। 1898 ई० में राजकुमार यामागाथ (Yamagata) जो आधुनिक सेना का प्रमुख संगठनकर्ता था, ने एक दूसरा अध्यादेश जारी किया।

(शेष नोट अगले दिन उपलब्ध कराया जायेगा)

इस अध्यादेश में इस दर का उल्लेख करते हुए यह कहा गया कि अंशदीय संधर्ष की स्थिति में सैन्य-शक्ति का प्रभारी कोई युद्ध एवं नौ सेना वंशी उच्च पद वाला सैनिक अधिकारी होगा, न कि नागरिक अधिकारी। 1912 ई० में इस अध्यादेश में मामूली फेर-बदल करते हुए यह कहा गया कि सेवा अवकाश प्राप्त सैनिक अधिकारी ही सैन्य-वंशी हो सकेगा। इस प्रकार जापान के सेना पर सम्राट का प्रभुत्व स्थापित हो गया था।

नयी शक्ति का प्रयोग तथा चीन-जापान युद्ध (Experiment of New Power and Sino-Japanese War)— जापान चीन के निकट का पड़ोसी देश था। वह चीन पर अपना विमर्श स्थापित करना चाहता था। जापान कोरिया पर भी अपना कब्जा करना चाहता था और इसके कारण जापान अपने नये सैन्य शक्ति का प्रयोग करना चाहता था। जब चीन 1885 ई० के शर्तों का उलंघन करते हुए कोरिया में अपनी सेना को भेज दिया तब जापान भी अपनी सेना कोरिया की राजधानी सिपोल में उतार दी। जापान कोरिया को लेकर चीन से युद्ध करना चाहता था। वह यूरोपीय देशों को भी अपनी सेना की शक्ति को दिखाना चाहता था। चीन जापान के अलावा यूरोपीय देश भी कोरिया के मामले में रुचि ले रहे थे। चीन भी जापान के विस्तार को कोरिया में रोकना चाहता था। फलतः दोनों के बीच चीन-जापान युद्ध प्रारम्भ हो गया।

युद्ध जो स्थल और समुद्र दोनों जगहों पर लड़ा गया जिसमें चीन को पराजित होना पड़ा और उसे जापान के साथ शिमो नो सेकी की सन्धि करनी पड़ी थी। इस सन्धि से जापान को पर्याप्त लाभ मिला था। फिर भी जर्मनी, फ्रांस और रूस के संयुक्त प्रयास और दबाव देने के कारण लियोतुंग चीन को वापस करना पड़ा तथा बदले में चीन ने जापान को एक बड़ी धनराशि (लगभग 7 करोड़ रुपये) दिया था।

बाक्सर विद्रोह को दबाने में जापान का योगदान (Contribution of Japan in the Suppression of Boxer Rebellion)— बाक्सर विद्रोह जो एक सुधारात्मक विद्रोह था, चीन में प्रारम्भ हुआ। पश्चिमी प्रभाव से देश को बचाने के लिए चीन का युवा सम्राट विद्रोह में बाक्सरों (Militant) का साथ दिया था। बाक्सर दल के लोगों ने पेकिंग स्थित विदेशी दूतावास पर आक्रमण कर दिया तथा वहाँ रह रहे विदेशियों को भीत के धार उतार दिया था। फलतः विदेशी लोगों द्वारा एक संयुक्त सेना का गठन किया गया। जापान ने पेकिंग में विदेशियों की जान बचाने में मदद की इसलिसे जापान को चीन के मामले में अन्तराष्ट्रीय सभा में बोलने का अधिकार प्राप्त हुआ था।

आंग्ल-जापानी सन्धि (Anglo-Japanese Treaty)— चीन-जापान युद्ध के बाद रूस, जर्मनी और फ्रांस संयुक्त होकर जापान पर जिस तरह दबाव बनाया और उसे लियोतुंग छोड़ने पर विवश किया था उससे जापान अकेला महशूस कर रहा था। इंग्लैंड भी चीन में रूस, फ्रांस और जर्मनी के बढ़ते प्रभाव से चिन्तित था और अपने एकाकी नीति को छोड़कर पूर्वी एशिया में अपने व्यापार को सुरक्षित

रखने के लिये जापान से मित्रता करना चाहता था। फलतः इंग्लैंड और जापान के बीच 1902 ई० में एक सन्धि हुई जो आंग्ल-जापानी सन्धि के नाम से जानी जाती है। इस सन्धि से दोनों देशों की शक्ति में बृद्धि हुई। इस सन्धि के बाद जापान की गिनती यूरोपीय देशों में बराबरी के स्तर पर होने लगी।

रूस-जापान युद्ध (Russo - Japanese War) - वास्तव में 1904-05 ई० का रूस-जापानी युद्ध आंग्ल-जापानी सन्धि का परिणाम था। रूस मंचूरिया में अपने प्रभाव में इजाफा करना चाहता था और अन्य साम्राज्यवादी देश रूस के मंचूरिया में बढ़ते प्रभाव का विरोध करते थे। रूस कोरिया पर अपना प्रभाव स्थापित करने का प्रयास किया। इससे जापान क्रोधित हो उठा क्योंकि वह कभी नहीं सोचा था कि रूस कोरिया पर अपना प्रभाव कायम करने का प्रयास करेगा। जापान रूस को कहा कि वह कोरिया में जापान के प्रभुत्व को स्वीकार करे और बदले में वह मंचूरिया पर रूस के प्रभाव को मानेगा लेकिन रूस ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हुआ। फलतः जापान ने 1904 ई० में रूस के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी।

रूस-जापान युद्ध चीन की धरती पर 1 वर्ष तक लड़ा गया जिसमें अमेरिका, इंग्लैंड, रूस और फ्रांस का धन लगा। युद्ध का अन्त अमेरिका के राष्ट्रपति के हस्तक्षेप के बाद हुआ। दोनों के बीच 5 सितम्बर 1905 ई० को पोर्ट आर्थर की सन्धि हुई। जापान की यह दूसरी सैनिक सफलता थी। युद्ध के बाद जापान को अत्यधिक लाभ हुआ। जापान की गिनती अब विश्व के शक्तिशाली देशों में होने लगी और एशिया एशियाई लोगों के लिए है' नारा लगने लगा। दुनिया के सामने रूस की सेना की कमजोरी प्रकट हो गयी। प्रथम विश्व युद्ध और जापान (First World War and Japan) - प्रथम विश्व युद्ध के प्रारम्भ होने के पूर्व जापान कोरिया और मंचूरिया के दक्षिणी भाग पर नियन्त्रण कर लिया था। जापान में पूँजीवाद की प्रवृत्ति बढ़ रही थी और वह चीन में अपने आर्थिक साम्राज्यवाद स्थापित करने की योजना बना रहा था। प्रथम विश्व युद्ध 1914 ई० में प्रारम्भ हुआ। जापान इस युद्ध में जर्मनी के विरुद्ध मित्र देशों की तरफ होकर 23 अगस्त 1914 ई० को भाग लिया। जापान शीघ्र ही चीन में स्थित जर्मनी के नियन्त्रण वाले क्षेत्र सिंगताओ (Singtao) और शान्तुग प्रदेश के जर्मनी के रेलवे और खानों (mines) पर प्रभुत्व कायम कर लिया।

युद्ध के अन्त के बाद चीनी शासक युझान शी काई के सामने जापान अपनी 21 माँगों को रखते हुए उसे मानने के लिए विवश कर दिया। कमजोर चीन के सामने जापानी अधिकांश माँगों के मानने के अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता नहीं था। जापान ने मुनरो के सिद्धान्त को एशिया महादेश में लागू करते हुए ' एशिया एशियाइयों के लिए है ' नारा दिया। जापान को प्रथम ^{विश्व} युद्ध में पर्याप्त लाभ प्राप्त हुआ। जापान अपनी युद्धक-सामग्री को युद्ध के दौरान बेच कर अधिक पूँजी एकत्रित कर लिया था। जापान की गिनती पूरब में उद्योग के क्षेत्र में इंग्लैंड के समान होने लगी थी।

जापान प्रथम विश्व युद्ध के बाद (Post War Japan) — प्रथम विश्व युद्ध के बाद जापान स्वयं को अकेला पाया। सोवियत संघ, जर्मनी और चीन जापान से घृणा करने लगे थे। मित्र देशों के शासकों का विश्वास भी अब जापान पर नहीं रहा। जापानी लोगों के समस्या का कारण खुद जापान में तेजी से होनेवाला औद्योगिकरण था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद जापान में कृषि उत्पाद में कमी आई जिसके कारण जापान में किसान संघ का निर्माण हुआ। 1921 में जापान में हड़तालें, तालाबंदी और प्रदर्शन होने लगे। 1920 का दौर जापान में बौद्धिक उदारवाद का युग था। लेकिन 1930 का दौर जापान के सैनिकवाद के दौर के नाम से जाना जाता था। वास्तव में आर्थिक मंदी, सैनिक साम्राज्यवाद के समर्थन की हवा, संसदीय नेताओं की असफलता और सैनिक शक्तियों का स्वायत्त स्वरूप ने जापान में सैन्यवाद को बढ़ाने में अधिक योगदान दिया।

सैनिक शक्तियों के क्रियाकलाप (Activities of Military forces) — जापान की सेना, चीनी सैनिकों पर मंचूरिया के रेलवे को उड़ाने एवं मंचूरिया को बर्बाद करने का बहाना बनाकर मंचूरिया में स्वतंत्र होकर अपनी कारवाइ करने लगी। इसी बीच जापानी नौ सेना ने संघर्ष पर नियंत्रण कर लिया। जापान की सैनिक कारवाइ की निन्दा राष्ट्रसंघ और अमेरिका ने किया लेकिन जापान ने इसकी कोई परवाह नहीं की। बल्कि उल्टे जापान ने राष्ट्रसंघ की सदस्यता को त्याग दिया। जापान का व्यवसायी वर्ग, नौकरशाह और जनता ने चीन में सैनिक कारवाइ की प्रशंसा की। यद्यपि यह एक अधिकृत आक्रमण नहीं था।

इसी समय 15 मई 1932 ई० को नौ सेना के अधिकारियों ने जापान के प्रधान मंत्री ^(इनूकाई) को हटा कर दिया और बहाना बनाया कि इनूकाई (Inukai) सम्राट से स्वतंत्र होना चाहता था। सैनिक अधिकारियों ने विस्कांउट एडमिरल सैटो (Viscount Admiral Satō) को राष्ट्रीय सरकार का प्रधान मंत्री बनाया जिसका समर्थन जनता, नौकरशाह और व्यापारी वर्ग ने किया। इस प्रकार मंत्रीमण्डल (Cabinet) में नागरिक और सैनिक शक्तियों का सन्तुलन स्थापित किया गया। धीरे-धीरे जापानी संसद की शक्ति को भी कमतर कर दिया गया यद्यपि इसे समाप्त नहीं किया गया।

विदेशी-विरोधी प्रचार (Anti-foreign Propaganda) — जापानी सैनिकों का विश्वास विदेशियों पर नहीं था। वे अपनी-अपनी सरकारों के गुलाम हैं ऐसा जापानी सैनिकों का मानना था। जापानी सैनिकों ने जापानी जनता को भरोसा दिया कि उनका उद्देश्य विदेशियों को एशिया से निकाल बाहर करना था। निःसंदेह जापान में सैनिकवाद का उदय बेहद स्वतंत्रता का था। सेना का दखल जापान के नागरिक प्रशासन में बढ़ता गया जो जापान को युद्ध की ओर ले गया। कई अवरोध के बावजूद सैन्यवादियों और राष्ट्रवादियों ने अपनी शक्ति जापान में मजबूत कर लिया और उनके इशारे पर जापानी राजनीतिज्ञ नाचने लगे।

चीन के विरुद्ध युद्ध (1937) War against China (1937) — जापानी सैनिकों ने मन्चूरिया की अर्बुदीन घटना को बहाना बनाकर चीन के साथ युद्ध 1937 ई० में प्रारम्भ कर दिये। जापान की कमजोर नागरिक सरकार ने जापानी सैनिकों के कारवाई का समर्थन किया। शीघ्र ही जापानी सेना ने पेकिंग और टीन्टसीन पर नियन्त्रण कर लिया और उत्तरी चीन और मंगोलिया को जीत लिया। संधाई में भी भीषण युद्ध चल रहा था। अल्पविक हानि उठाने के बावजूद चीन जापान के साथ युद्ध जारी रखा। अन्ततः यह युद्ध द्वितीय विश्व युद्ध के रूप में परिवर्तित हो गया। इसी बीच जापान जर्मनी से 1936 ई० में साम्यवादी विरोधी सन्धि (Anti Communist Treaty) कर ली। एक साल बाद उसने इटली भी शामिल हो गया। 1940 ई० में फ्रांस के जर्मनी के साथ हारने से जापान ने फ्रेन्च इण्डो चीन में हस्तक्षेप शुरू किया। जर्मनी और जापान के उपलब्धियों को देखकर युद्ध में इनके खिलाफ भाग लिया। अमेरिका ने विदेशों में जापानी सम्पत्ति को जब्त कर जापान के आर्थिक संसाधनों पर करारा-चोट पहुँचाया।

जापान ने अमेरिका के पर्ल हार्बर पर 7 दिसम्बर 1941 ई० को आक्रमण कर दिया और जर्मनी के तरफ से युद्ध में बूढ़ गया। फलस्वरूप अमेरिका भी जापान-जर्मनी के खिलाफ मित्र देशों के तरफ से युद्ध में शामिल हुआ। इस युद्ध में जापान और जर्मनी की हार हुई और मित्र देशों को विजय प्राप्त हुई। इस प्रकार युद्ध में जापान के हार जाने से उसके सैन्यवादी युग का अन्त हुआ और जापानी सरकार का नेतृत्व उदारवादी शासकों के हाथों में चला गया।